गरीब फेरीवाला

प्रचीन अरबी कहानी

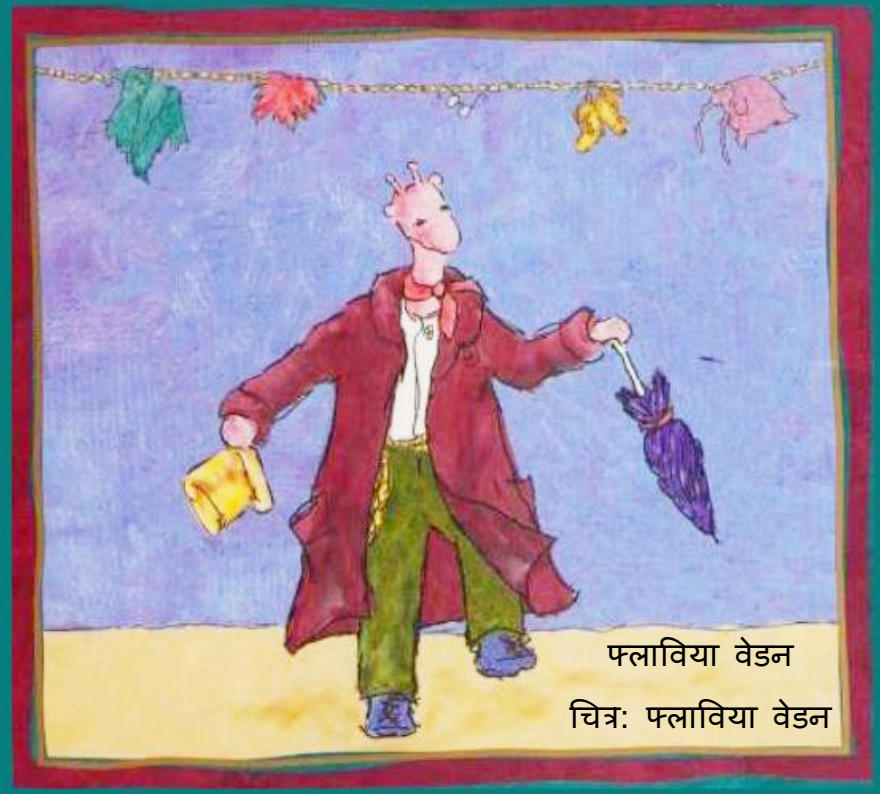

फ्लाविया वेडन

चित्र: फ्लाविया वेडन

एक सुंदर छोटा शहर था जो एक हरे-भरे पहाड़ की तलहटी में बसा था. पर वहां रहने वाले लोग दुखी थे, क्योंकि वे अपनी शिकायतों और दुखों के परे नहीं देख पाते थे. एक दिन एक फेरीवाला वाला शहर में आया और उसने नगरवासियों से उनकी परेशानियों लेकर उन्हें खुशी देने की पेशकश की. लोगों ने उसके इस विचार का मजाक उड़ाया! वो भला कैसे संभव हो सकता था? लेकिन अंत में लोगों ने वो करने फैसला किया क्योंकि उनके पास उसमें खोने के लिए कुछ भी नहीं था. पर अंत में जो कुछ हुआ वो वास्तव में अद्भुत और जादुई हुआ.

यह लोककथा हम सभी को याद दिलाती है कि खुशी एक ऐसा विकल्प है जिसे हम सब चुन सकते हैं, और हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारी ज़िंदगी की परेशानियां हम पर कभी हावी न हों और वो हम से जीवन की खुशियों को छीन न पाएं.

चांद के दूसरी तरफ अपने घर पर, समय भगवान ने, अपने आठ सबसे भरोसेमंद कहानीकारों को, सभी बच्चों को आशा का संदेश देने के लिए बुलाया. उनका मिशन दुनिया भर में जादुई कहानियों को फैलाना था: ऐसी कहानियां जो हमें याद दिलाती रहें कि हम सभी एक परिवार, एक दुनिया के हैं; कि हमारे दिल एक ही भाषा बोलते हैं, चाहे हम कहीं भी रहते हों या हम कितने भी अलग दिखते या बोलियां बोलते हों. और हम में से प्रत्येक को यह अधिकार है कि दुनिया हमसे प्यार करे, हमारा पालन-पोषण करे, और हमें अपने सपनों तक पहुंचने में मदद दे.

यह उन कहानियों में से एक है. अपने दिल से बात सुनें और उसका जादू दूसरों के साथ बाँटें.

गरीब फेरीवाला

प्रचीन अरबी कहानी

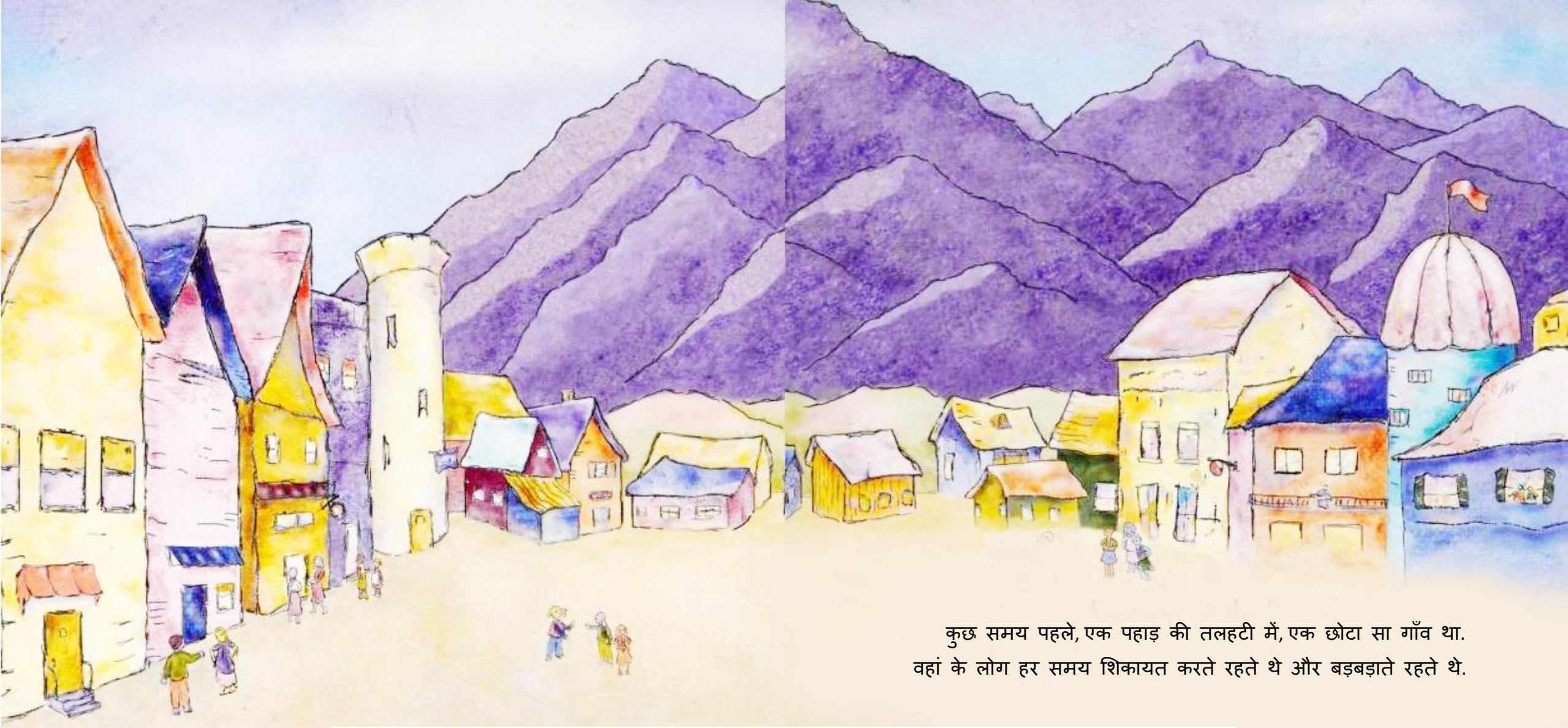

कुछ समय पहले, एक पहाड़ की तलहटी में, एक छोटा सा गाँव था.
वहां के लोग हर समय शिकायत करते रहते थे और बड़बड़ाते रहते थे.

उनके पास जो कुछ भी था उससे वे कभी संतुष्ट नहीं होते थे और हमेशा बहस करते थे और दुखी रहते थे. गाँव में रहने वाले सभी लोगों के पास काम था, इसलिए सबके पास एक घर, खाने के लिए पर्याप्त भोजन और पहनने के लिए कपड़े थे. लेकिन उनमें से हरेक यह सोचता था कि उसकी अपनी समस्याएँ भयानक थीं, और गाँव में किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में उसकी परेशानियां सबसे ज़्यादा थीं.

वो लोग लगातार शिकायत करते रहते थे जबकि उन्हें खुश रहना चाहिए था और इतने अच्छे जीवन के लिए आभारी होना चाहिए था.

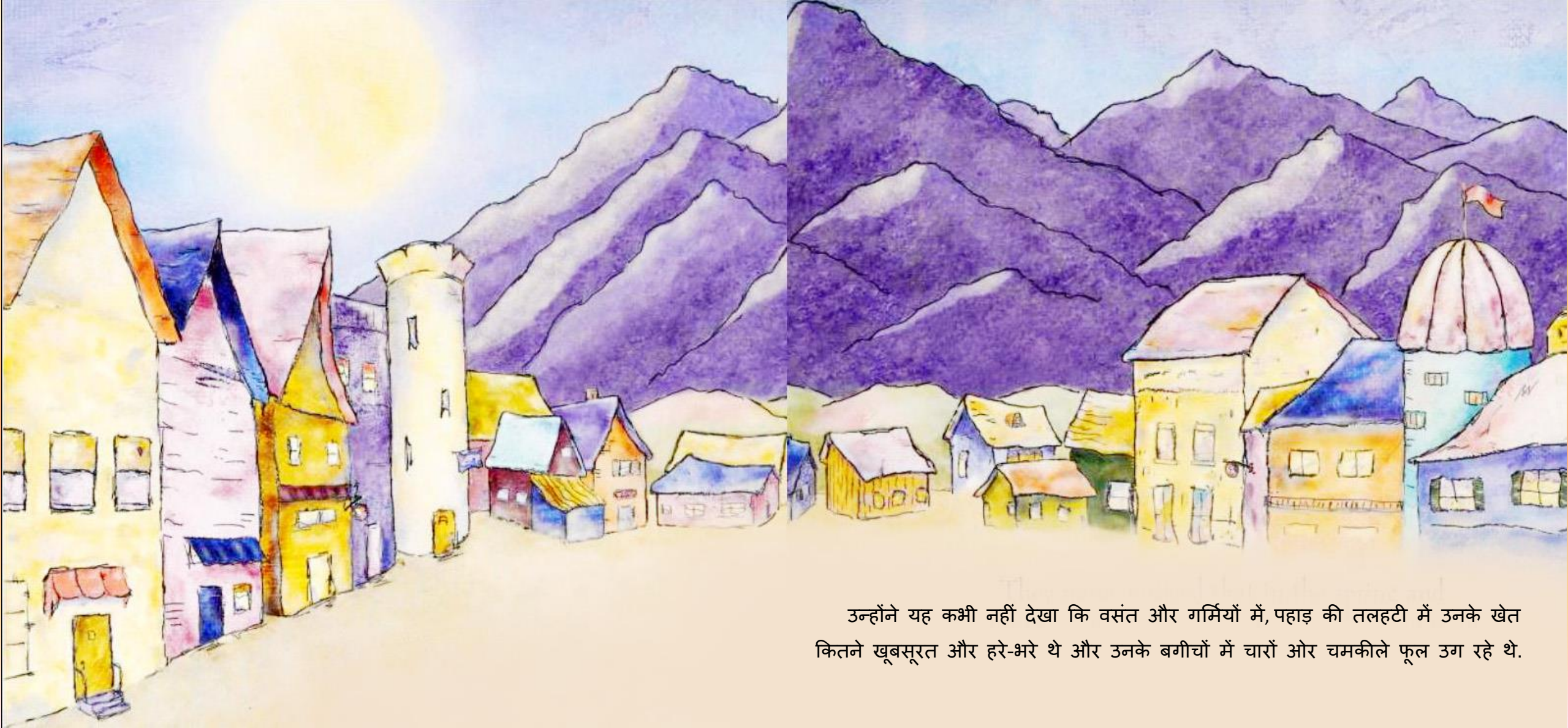

उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि वसंत और गर्मियों में, पहाड़ की तलहटी में उनके खेत
कितने खूबसूरत और हरे-भरे थे और उनके बगीचों में चारों ओर चमकीले फूल उग रहे थे.

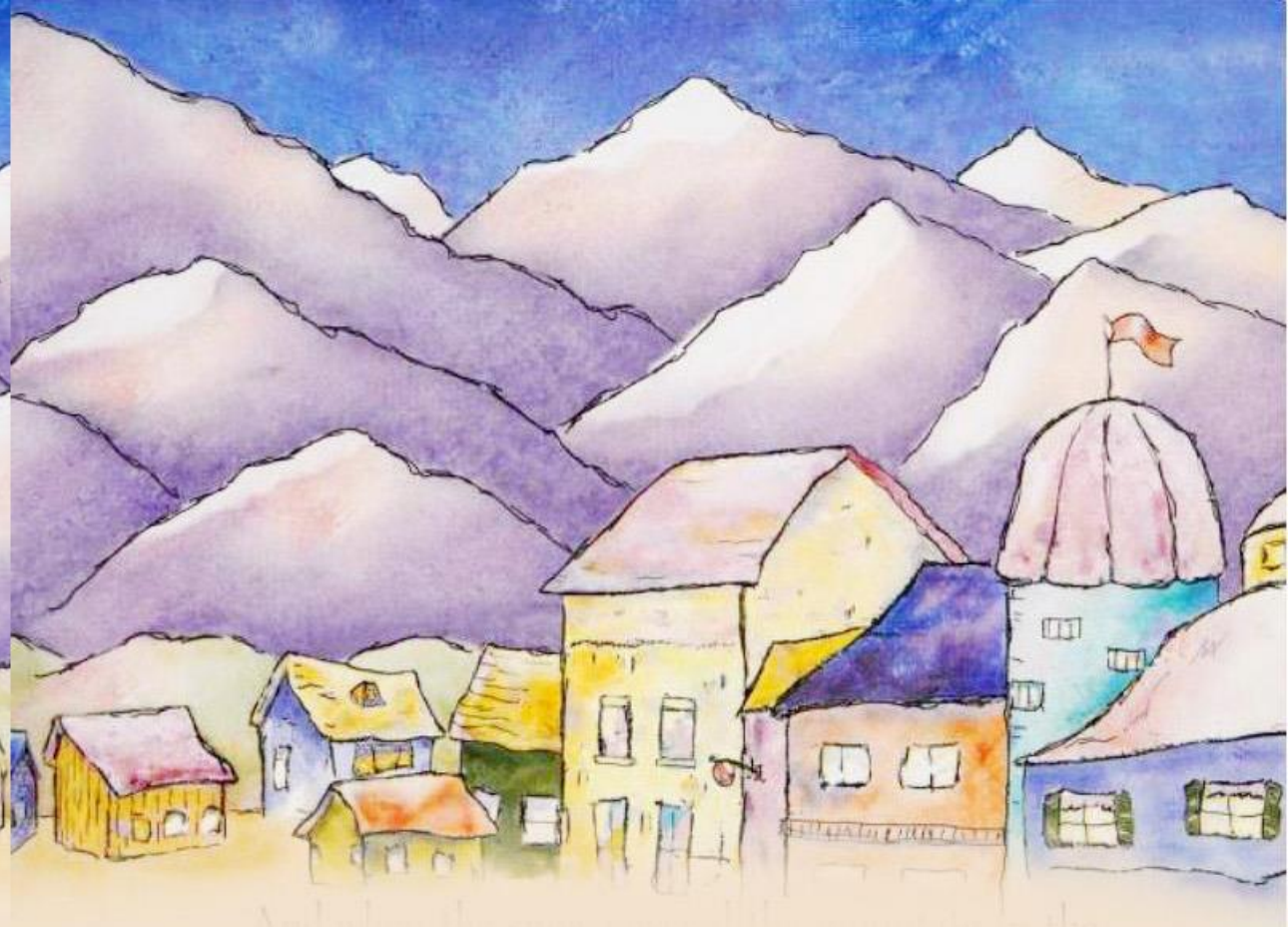

और जब सर्दियों में बर्फ, पहाड़ को ढँकता था, तो धूप में वो कितना आलीशान लगता था. ढलते सूरज की हल्की गुलाबी चमक कितनी सुन्दर होती थी. लोग यह कभी नहीं सोचते थे कि वे कितने खुशकिस्मत थे कि उन्हें इतने सुंदर गाँव में रहना नसीब था.

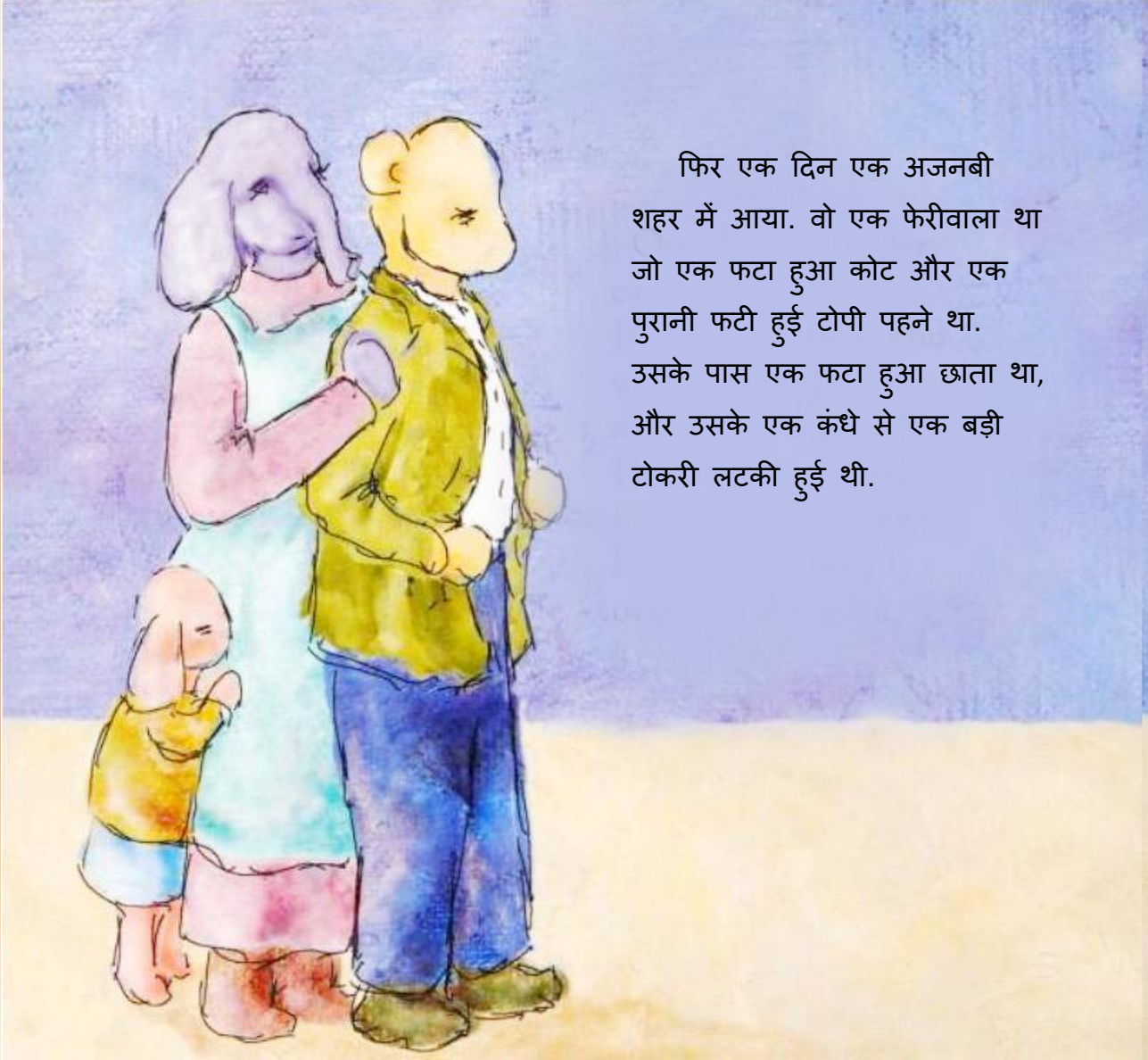

फिर एक दिन एक अजनबी शहर में आया. वो एक फेरीवाला था जो एक फटा हुआ कोट और एक पुरानी फटी हुई टोपी पहने था. उसके पास एक फटा हुआ छाता था, और उसके एक कंधे से एक बड़ी टोकरी लटकी हुई थी.

बेल्ट की तरह उसके पेट से एक लंबी रस्सी बंधी थी. उसके जूते पुराने थे और उन पर पैबंद लगे थे.

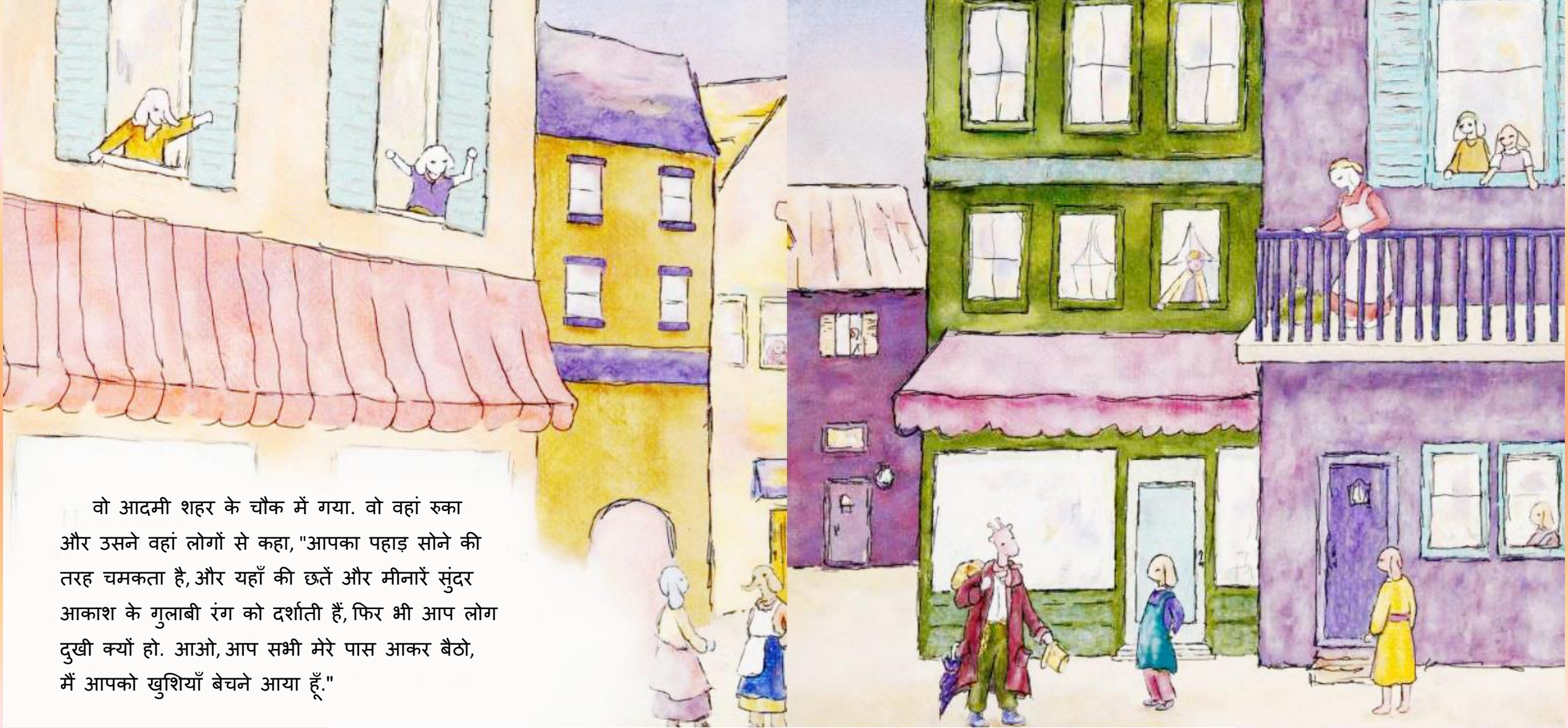

वो आदमी शहर के चौक में गया. वो वहां रुका और उसने वहां लोगों से कहा, "आपका पहाड़ सोने की तरह चमकता है, और यहाँ की छतें और मीनारें सुंदर आकाश के गुलाबी रंग को दर्शाती हैं, फिर भी आप लोग दुखी क्यों हो. आओ, आप सभी मेरे पास आकर बैठो, मैं आपको खुशियाँ बेचने आया हूँ."

उसकी बात सुनकर सब लोग हँसे और उन्होंने उसे मूर्ख समझा. "तुम न केवल एक मूर्ख जैसे दिखते हो," लोगों ने कहा, "तुम एक मूर्ख की तरह बातें भी करते हो. तुम अपने साथ एक रस्सी और एक खाली टोकरी के अलावा और कुछ नहीं लाए हो. भला तुम हमें खुशी कैसे बेंच सकते हो?" और उसके बाद वे और भी ज़ोर से हँसे क्योंकि वे उस अजनबी का मज़ाक उड़ा रहे थे.

लेकिन फेरीवाला बस मुस्कुराया. उसने कुछ नहीं कहा. उसने वहां मौजूद एक बच्चे को रस्सी सौंप दी. हालांकि दिल में संदेह होने के बावजूद लोग उत्सुक थे. इसलिए लोग देखने के लिए उसके चारों ओर जमा हो गए

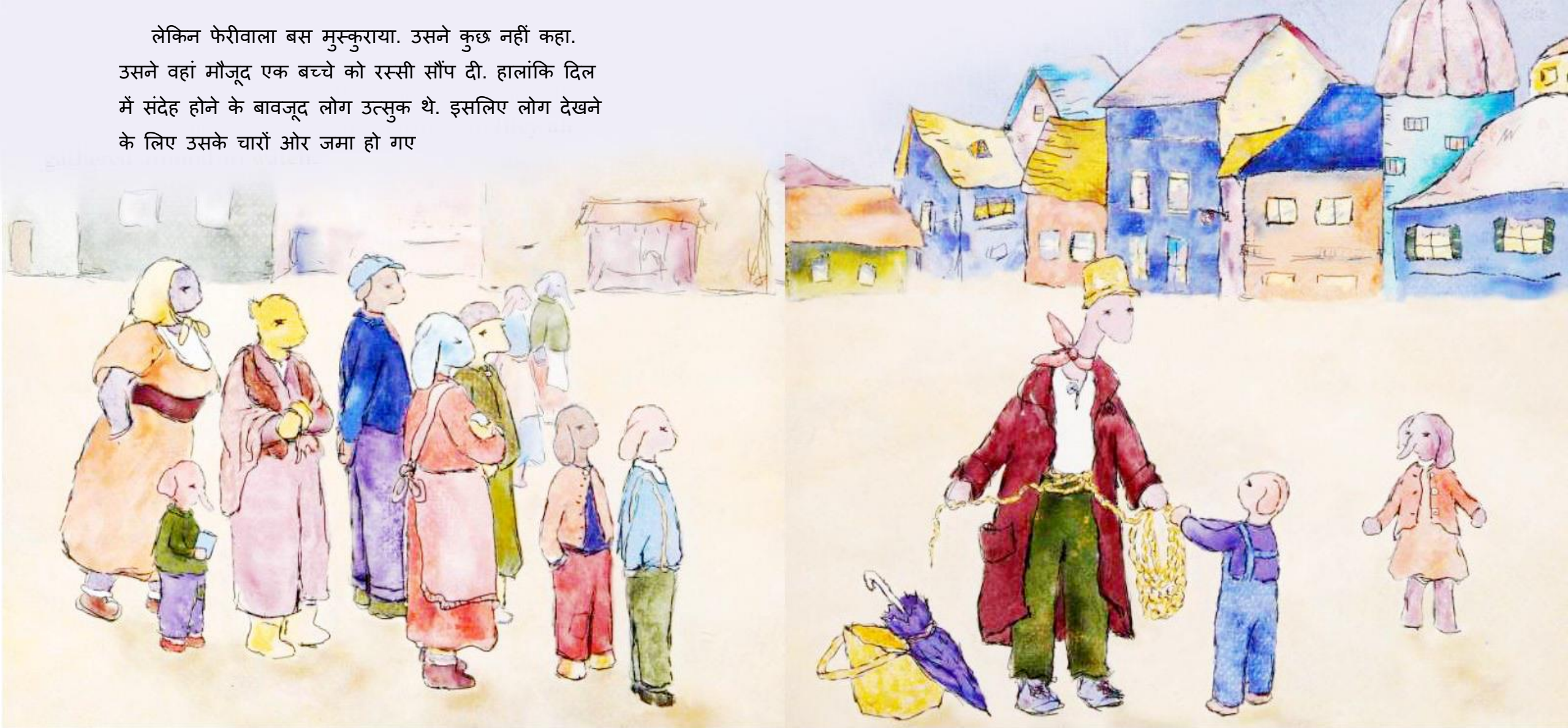

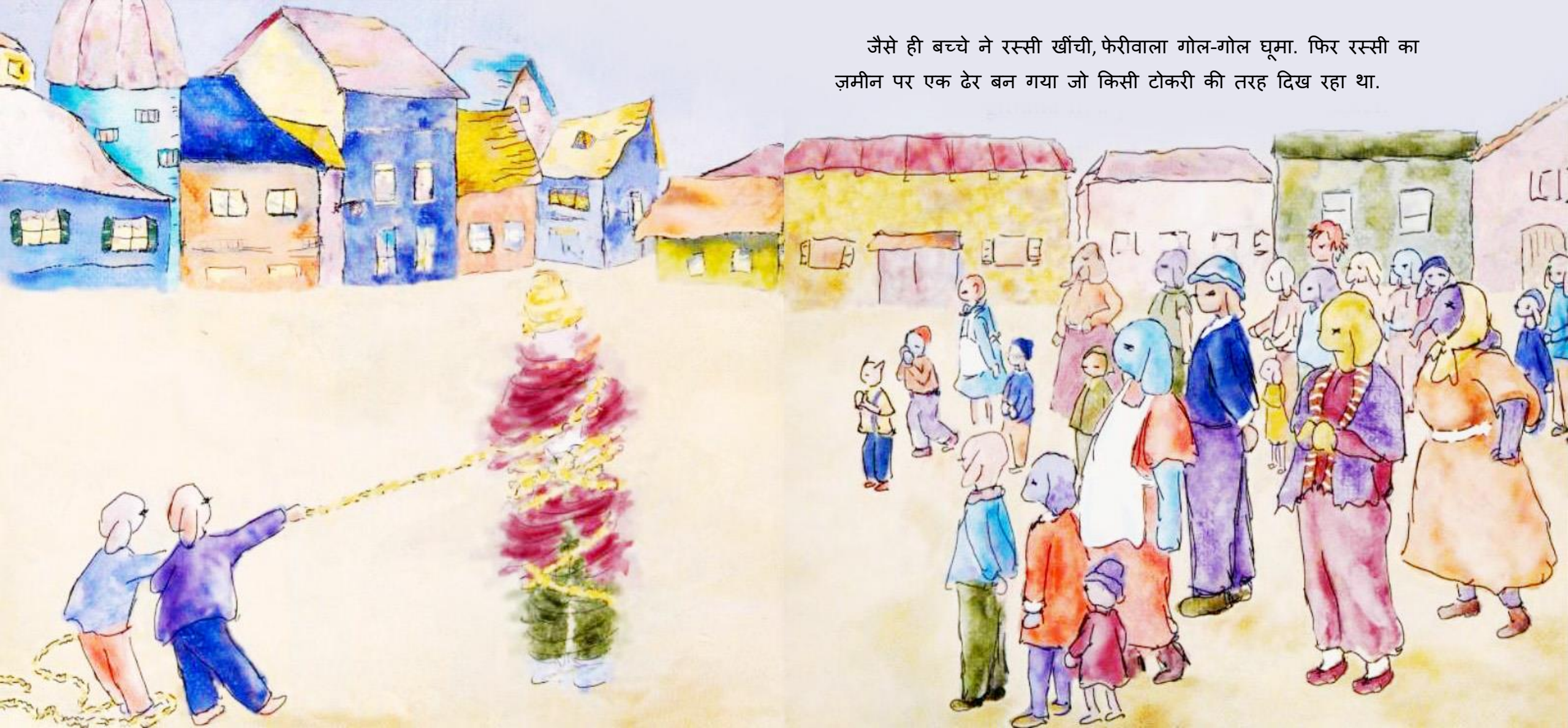

जैसे ही बच्चे ने रस्सी खींची, फेरीवाला गोल-गोल घूमा. फिर रस्सी का ज़मीन पर एक ढेर बन गया जो किसी टोकरी की तरह दिख रहा था.

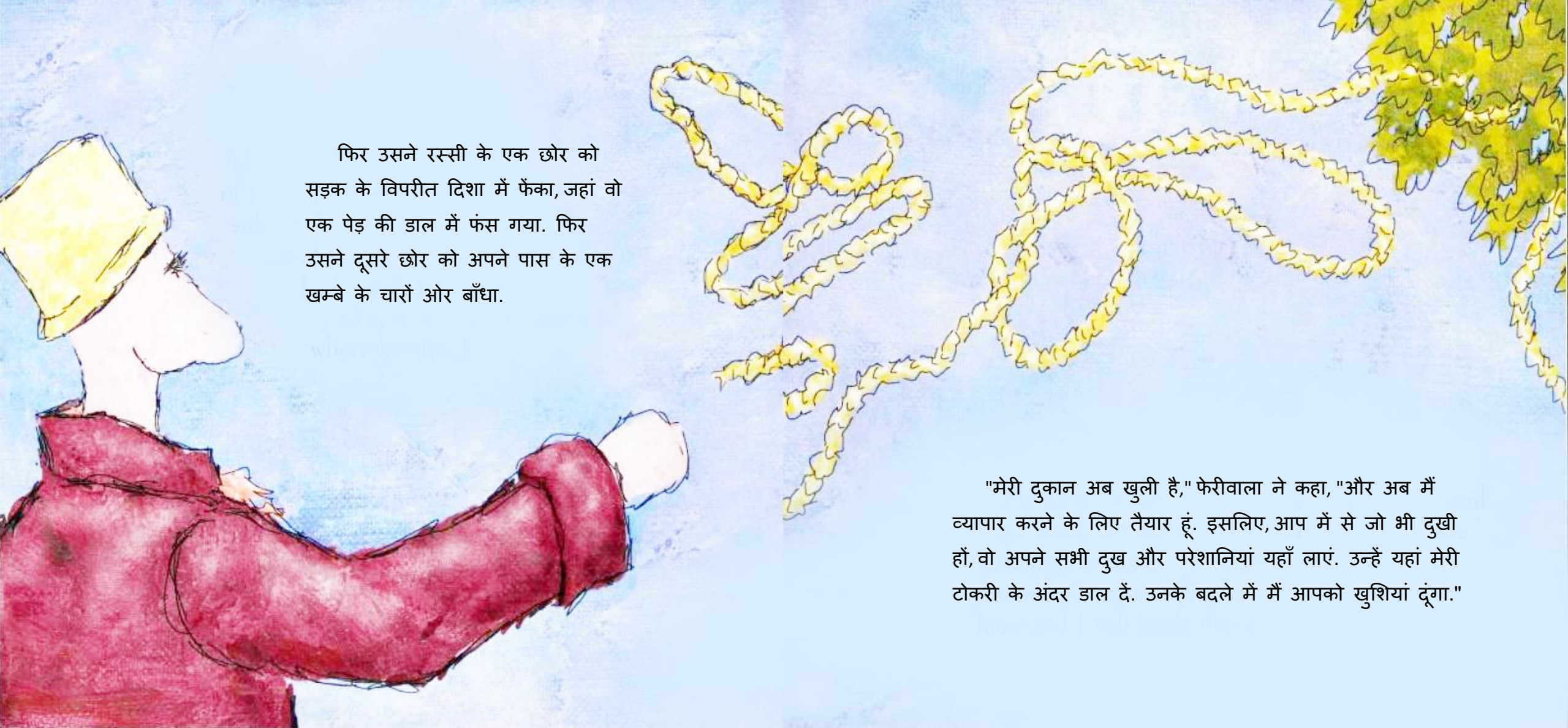

फिर उसने रस्सी के एक छोर को सड़क के विपरीत दिशा में फेंका, जहां वो एक पेड़ की डाल में फंस गया. फिर उसने दूसरे छोर को अपने पास के एक खम्बे के चारों ओर बाँधा.

"मेरी दुकान अब खुली है," फेरीवाला ने कहा, "और अब मैं व्यापार करने के लिए तैयार हूं. इसलिए, आप में से जो भी दुखी हों, वो अपने सभी दुख और परेशानियां यहाँ लाएं. उन्हें यहां मेरी टोकरी के अंदर डाल दें. उनके बदले में मैं आपको खुशियां दूंगा."

फेरीवाले ने लोगों को फुसफुसाते हुए और आपस में चर्चा करते हुए देखा.

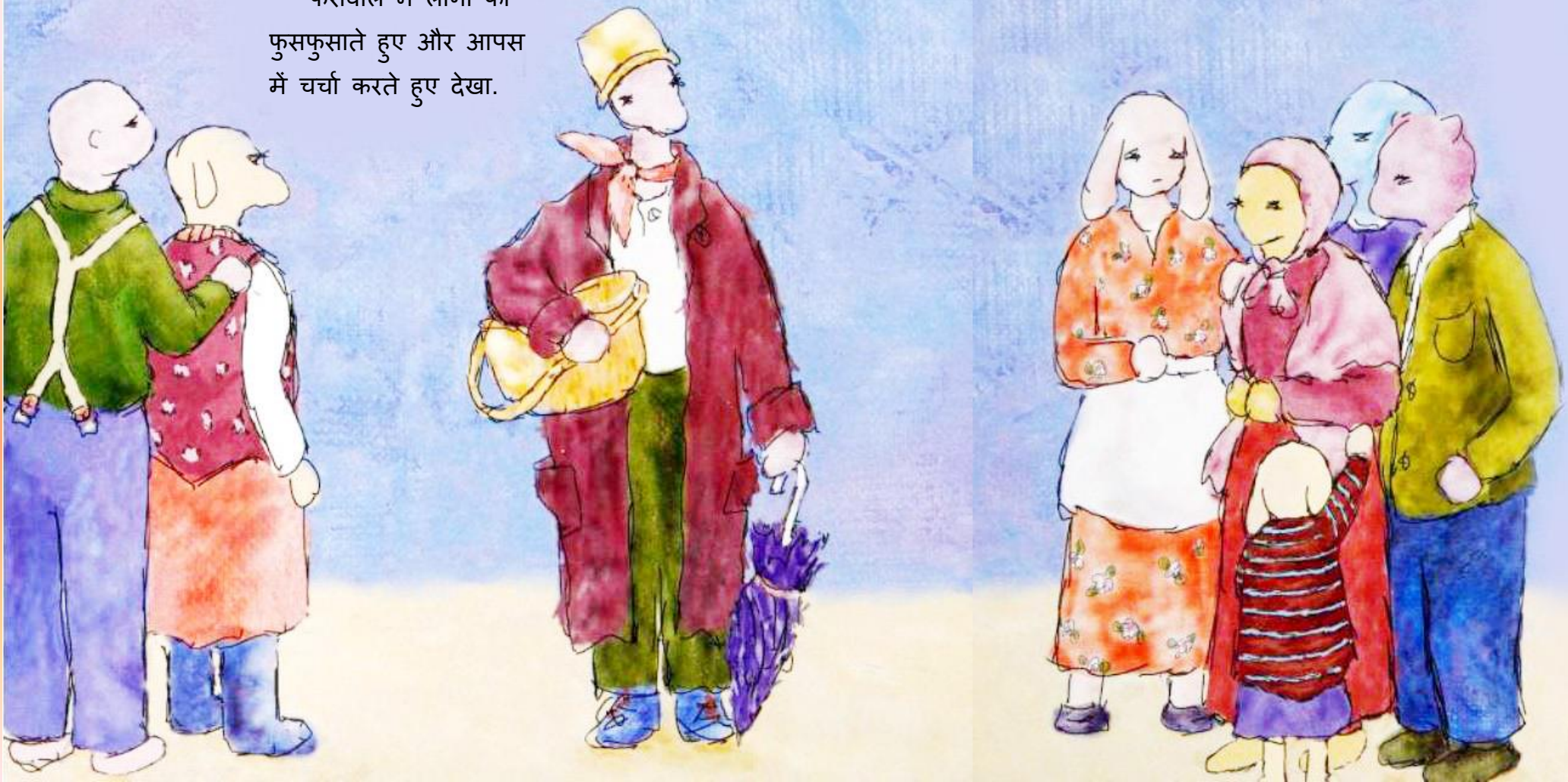

"जो मैंने सोचा था यह तो उससे भी बड़ा मूर्ख निकला," उनमें से एक आदमी हँसा.

"उसमें ज़रूर कोई चाल छिपी होगी," दूसरे ने कहा.

तभी एक आवाज सुनाई दी, "चलो करते हैं और देखते हैं क्या होता है!"

"हम अपनी परेशानियों और दुखों के अलावा भला और क्या खो सकते हैं?" एक अन्य ने कहा.

इसलिए, अविश्वास के बावजूद, सभी लोगों ने अपनी सारी शिकायतें, परेशानियां और दुःख उस अजनबी की टोकरी में फेंक दिए.

फिर फेरीवाले वाले ने टोकरी ली और उसे रस्सी पर उठाया. वहां टोकरी खुद अपने आप संतुलित हो गई. अचानक टोकरी, रस्सी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लुढ़कने लगी.

जैसे-जैसे टोकरी लुढ़की, उसने सभी की परेशानियों को गिरा दिया.

जल्द ही हर शिकायत, परेशानी और दुःख टोकरी के बाहर गिरे और सभी के देखने के लिए रस्सी पर लटक गए.

उसमें मछुआरे का

पहना हुआ पुराना स्वेटर था. . .

बेकर के लाल बाल थे..

दर्जी की छड़ी. . .

और फूल वाली महिला

के फटे हुए जूते शामिल थे.

“अब मेरे अच्छे लोगों," फेरीवाला ने कहा, "आप लोगों को सिर्फ एक काम करने की ज़रूरत है. आप में से हरेक व्यक्ति, रस्सी पर से उस परेशानी या बला उठाए जिसे वो सबसे छोटी परेशानी मानता हो.”

लोगों के बीच एक बड़ी खामोशी छा गई. फिर हरेक व्यक्ति फेरीवाले की कही बात को, गंभीरता से सोचने लगा.

मछुआरे ने सभी शिकायतों को करीब से देखा. फिर दर्जी से कहा, "मुझे अपने स्वेटर नापसंद है क्योंकि उसमें छेद हैं, और उसका रंग फीका पड़ गया है, और उसका एक बटन गायब है. लेकिन फिर भी मैं किसी और चीज की बजाए उसे लेना चाहूंगा. मैं नया बटन टांक सकता हूँ और छेदों को रफ़ू कर सकता हूँ. और रंग फीका पड़ने से मेरा स्वेटर अब एक अलग ओर नए रंग का लग रहा है."

फिर बेकर बोला. "मैं बेंत या फटे-पुराने स्वेटर का क्या करूँगा? मुझे अपने लाल बालों के बारे में शिकायत थी क्योंकि उनके कारण ही मैं शहर के बाकी लोगों में बिल्कुल अलग-थलग छिटकता था. लेकिन अब मैं देख रहा हूँ कि वही मेरे बालों का असली रंग है और मेरे बाल मेरे वजूद का एक अहम् हिस्सा हैं. इसलिए शर्मिंदा होने की बजाए मुझे अपने लाल बालों पर गर्व होना चाहिए!"

फूल वाली महिला ने दर्जी से हंसते हुए कहा, "क्या मेरे जूते आप में से किसी को अजीब नहीं लगे? मैंने उनके बारे में पहले कभी नहीं सोचा था, लेकिन मैं अपने जूते पॉलिश कर सकती हूँ और फिर वे नए जूतों की तरह ही चमक जायेंगे. मैं अपने पुराने जूतों को रखना चाहती हूँ!"

दर्जी ने अपने बेंत को देखकर कहा, "मेरा बेंत मजबूत है और वो मुझे चलने में मदद करता है. फिर मुझे उससे शिकायत क्यों? वास्तव में, मैं अपने बेंत का बहुत आभारी हूं!"

जल्द ही सबको यह स्पष्ट हो गया. जब हरेक व्यक्ति ने अपनी खुद की शिकायत या परेशानी को, रस्सी पर लटके हुआ पाया, तो उन्हें वो परेशानी काफी छोटी और तुच्छ लगी.

जल्दी से लोगों ने अपनी-अपनी परेशानियां, रस्सी पर से वापस उठा लीं. कुछ ही सेकंड में लाइन खाली हो गई.

"क्या आप में से हरेक ने अपनी सबसे छोटी परेशानी को उठा लिया है?" फेरीवाले ने पूछा.

"हाँ!" वे एक साथ चिल्लाए.

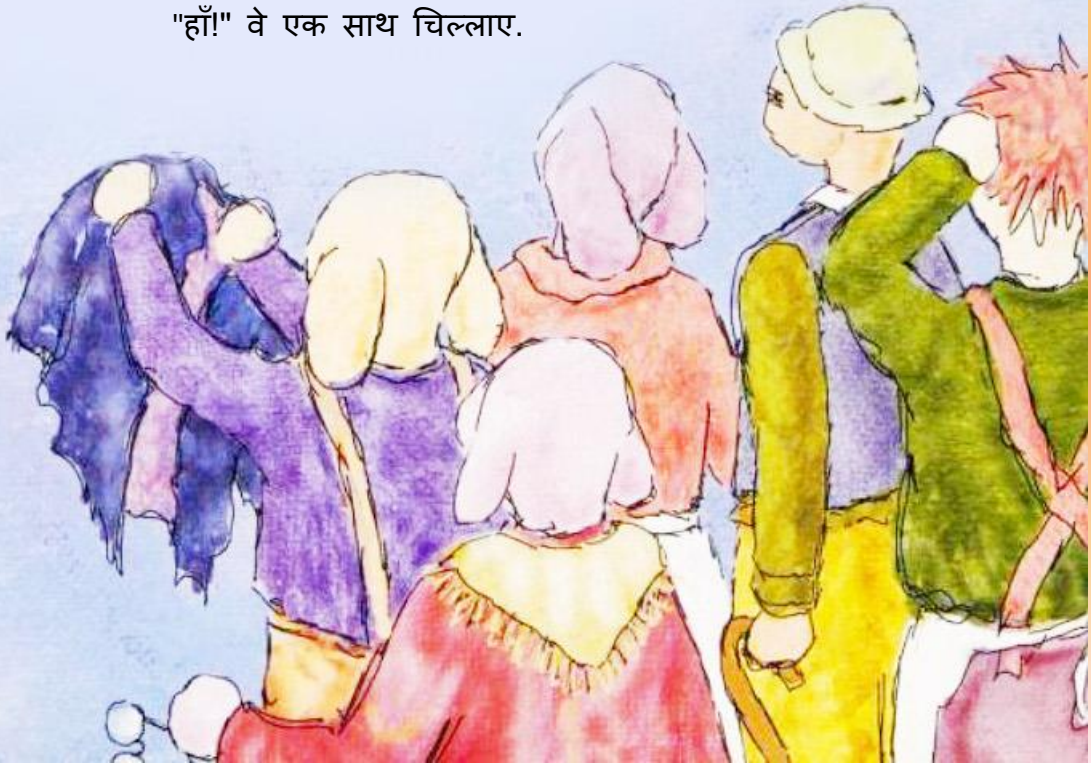

"फिर अब आप लोग खुश रहें!" फेरीवाले ने कहा. फिर उसने अपनी टोकरी और रस्सी उठाई और वो वहां से चलता बना.

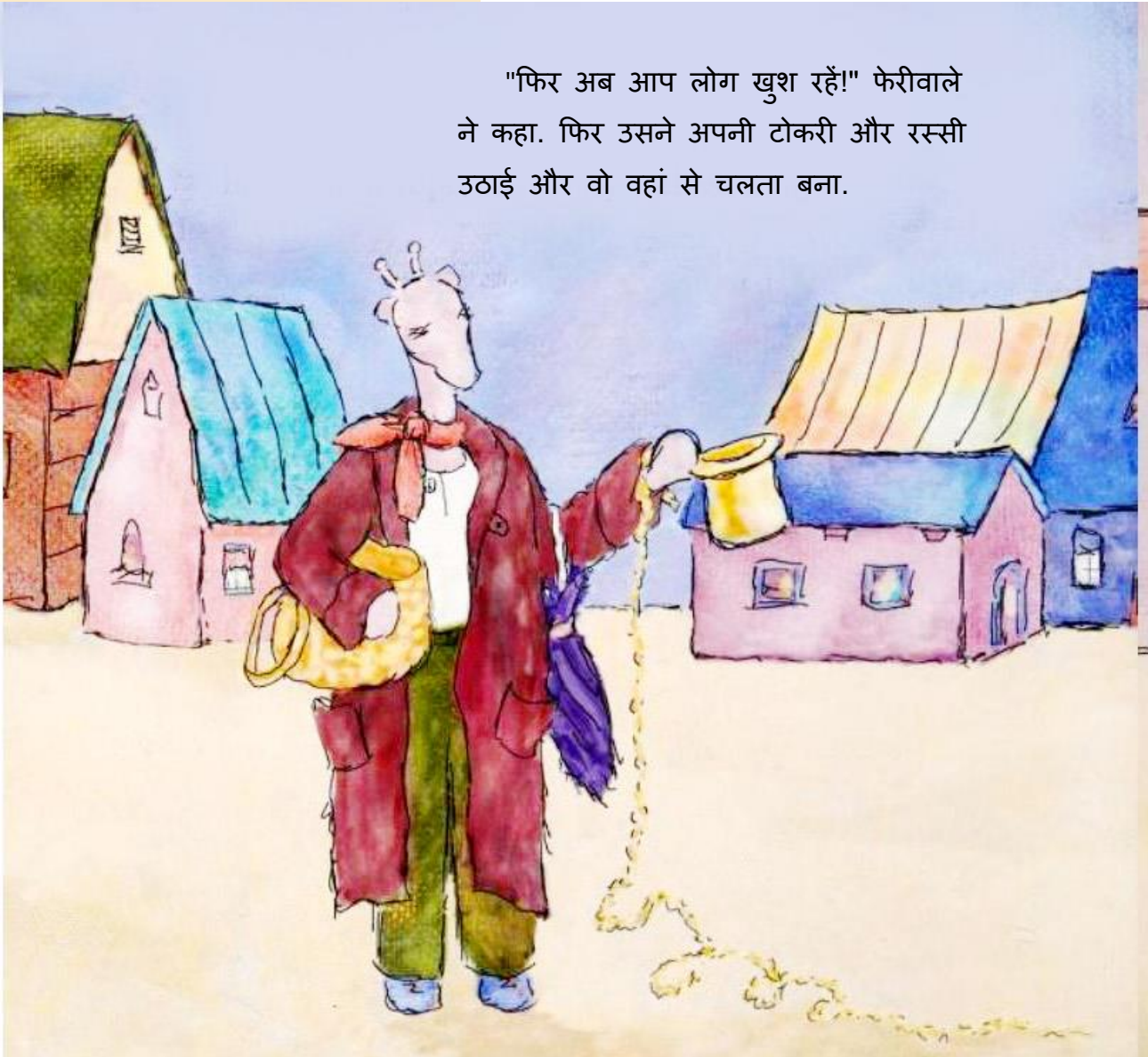

उस क्षण के बाद से, गाँव के लोगों के पास फिर कभी शिकायत करने या बड़बड़ाने का कोई कारण नहीं बचा. उन्होंने अपने गाँव का दौरा करने वाले एक बुद्धिमान अजनबी से एक मूल्यवान सबक सीखा था.

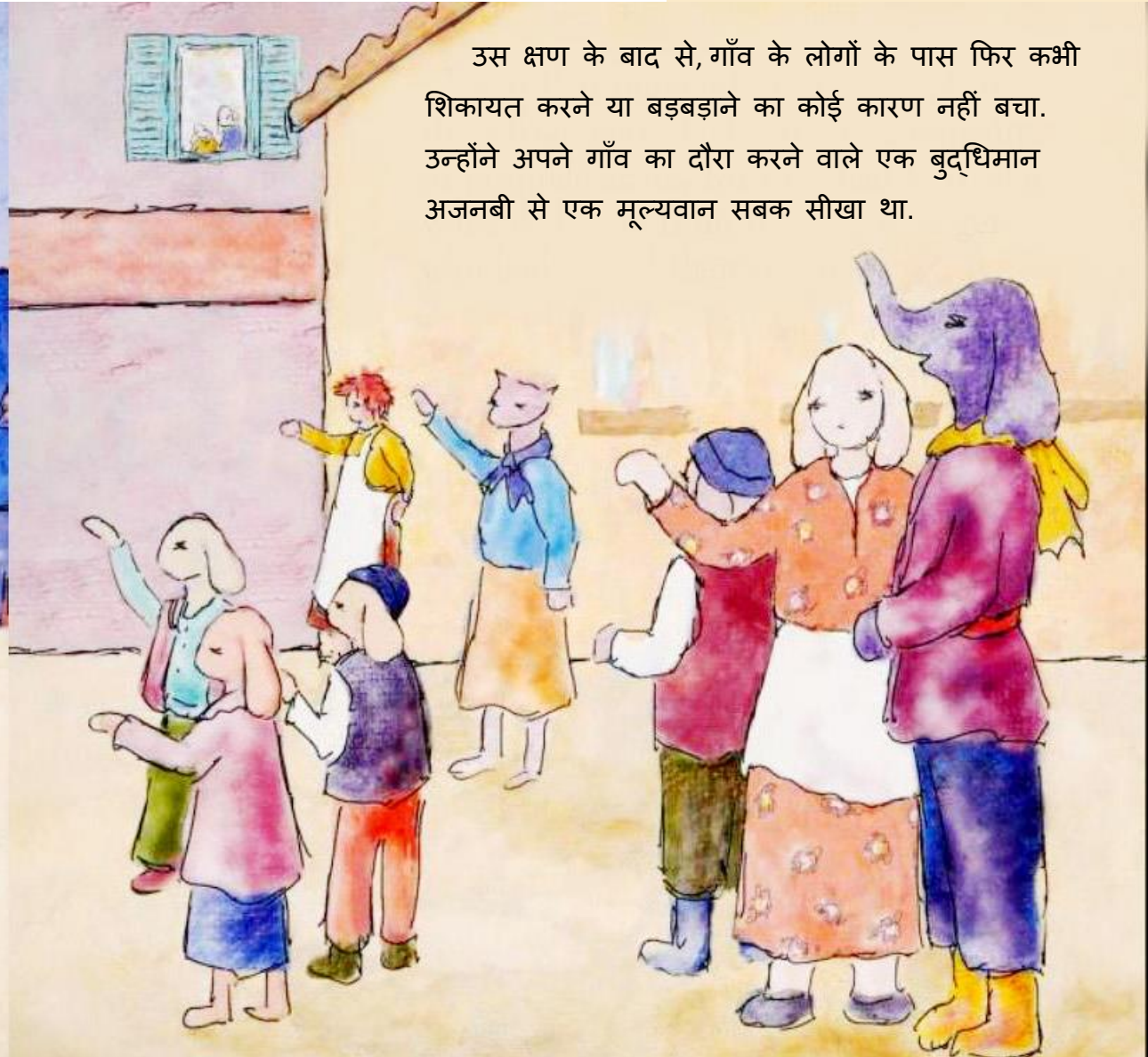

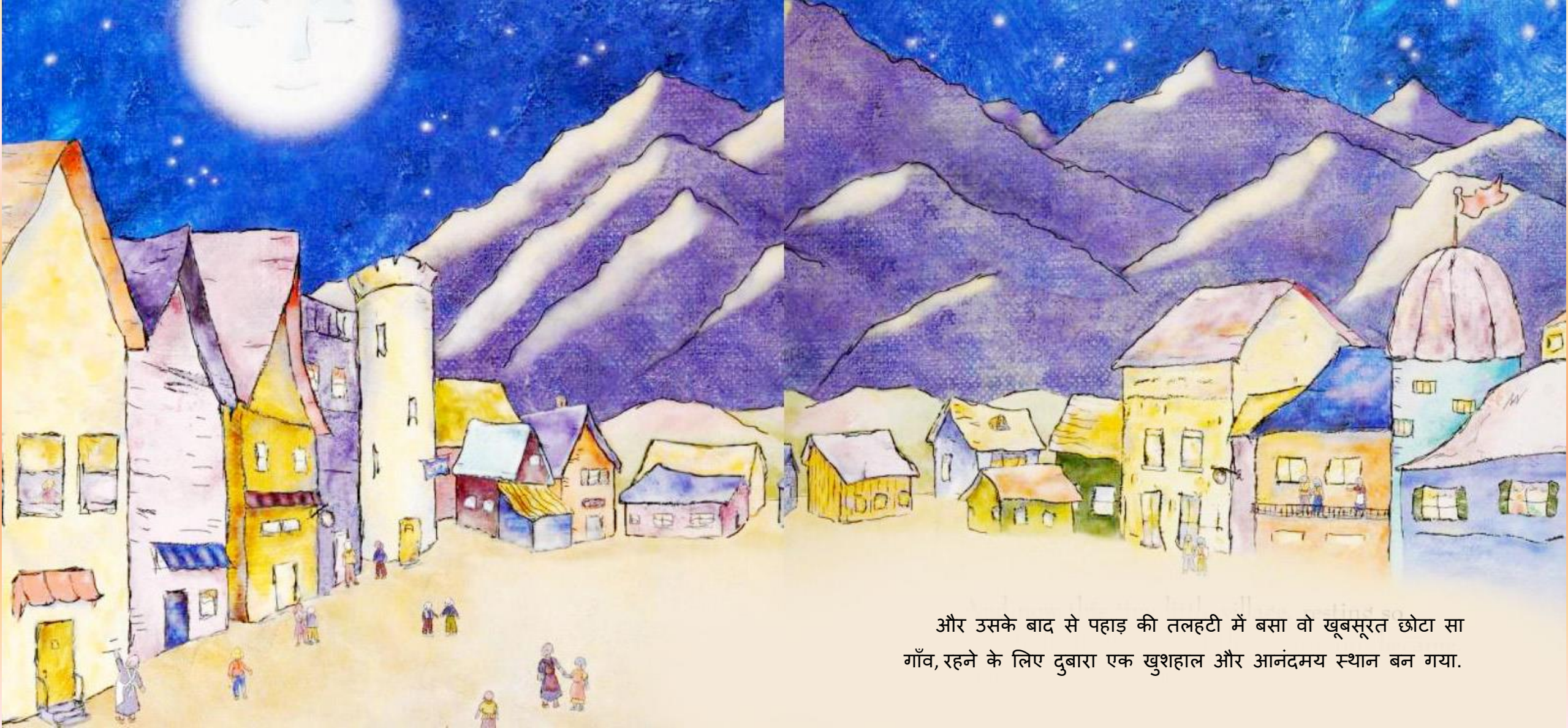

और उसके बाद से पहाड़ की तलहटी में बसा वो खूबसूरत छोटा सा गाँव, रहने के लिए दुबारा एक खुशहाल और आनंदमय स्थान बन गया.